Vol II Issue V Nov 2012

Impact Factor : 0.1870

ISSN No :2231-5063

Monthly Multidiciplinary Research Journal

Golden Research Thoughts

Chief Editor
Dr.Tukaram Narayan Shinde

Publisher
Mrs.Laxmi Ashok Yakkaldevi

Associate Editor
Dr.Rajani Dalvi

Honorary
Mr.Ashok Yakkaldevi

IMPACT FACTOR : 0.2105

Welcome to ISRJ

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2230-7850**

Indian Streams Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

International Advisory Board

Flávio de São Pedro Filho
Federal University of Rondonia, Brazil

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Janaki Sinnasamy
Librarian, University of Malaya [Malaysia]

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

Titus Pop

Mohammad Hailat
Dept. of Mathmatical Sciences, University of South Carolina Aiken, Aiken SC 29801

Abdullah Sabbagh
Engineering Studies, Sydney

Catalina Neculai
University of Coventry, UK

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Fabricio Moraes de Almeida
Federal University of Rondonia, Brazil

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher

Hasan Baktir
English Language and Literature Department, Kayseri

Ghayoor Abbas Chotana
Department of Chemistry, Lahore University of Management Sciences [PK]

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Horia Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Ilie Pintea,
Spiru Haret University, Romania

Xiaohua Yang
PhD, USA

Nawab Ali Khan
College of Business Administration

Editorial Board

Pratap Vyamktrao Naikwade
ASP College Devrukh,Ratnagiri,MS India

R. R. Patil
Head Geology Department Solapur University, Solapur

Rama Bhosale
Prin. and Jt. Director Higher Education, Panvel

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Chakane Sanjay Dnyaneshwar
Arts, Science & Commerce College, Indapur, Pune

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut

Iresh Swami
Ex - VC. Solapur University, Solapur

N.S. Dhaygude
Ex. Prin. Dayanand College, Solapur

Narendra Kadu
Jt. Director Higher Education, Pune

K. M. Bhandarkar
Praful Patel College of Education, Gondia

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

G. P. Patankar
S. D. M. Degree College, Honavar, Karnataka

Maj. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

S.Parvathi Devi
Ph.D.-University of Allahabad

Sonal Singh

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

R. R. Yalikar
Director Managment Institute, Solapur

Umesh Rajderkar
Head Humanities & Social Science YCMOU, Nashik

S. R. Pandya
Head Education Dept. Mumbai University, Mumbai

Alka Darshan Shrivastava
Shaskiya Snatkottar Mahavidyalaya, Dhar

Rahul Shriram Sudke
Devi Ahilya Vishwavidyalaya, Indore

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University,TN

Satish Kumar Kalhotra

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.isrj.net

Golden Research Thoughts
Volume 2, Issue. 5, Nov. 2012
ISSN:-2231-5063 Available online at www.aygrt.net

ORIGINAL ARTICLE

हिन्दी पत्रकारिता : ''वैश्वीकरण के सन्दर्भ में''

राजविन्द्र कौर

सहायक प्रोफेसर (हिन्दी शिक्षण) विश्वविद्यालय शिक्षण महाविद्यालय
कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र

सारांश :

भारत के 50 प्रतिशत से अधिक लोग हिन्दी का प्रयोग करते हैं और 72 प्रतिशत से अधिक लोग हिन्दी समझ सकते हैं ब्रिटिश काउंसिल की एक रिपोर्ट के अनुसार 33 करोड़ 60 लाख लोग अंग्रेजी को अपनी मातृभाषा के रूप में स्वीकार करते हैं और हिन्दी को अपनी मातृभाषा मानने वाले 38.68 करोड़ हैं।

भारत से बाहर के देशों विशेशकर मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, ट्रिनीडाड आदि देशों में प्रवासी भारतीयों की विपुल संख्या है। इन देशों में विगत् लगभग 150–160 वर्षों से प्रवासी भारतीयों तथा उनके वंशजों ने हिंदी, हिन्दू संस्कृति एवं हिन्दुस्तानी को जीवित रखा है और उनके द्वारा किए गए प्रयासों में हिन्दी भाषा में पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन भी महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। भारतीय समाज को एक सूत्र में जोड़े रखने के लिए हिन्दी में पत्र–पत्रिकाएं आरम्भ की और अपने पाठकों को हिन्दी की सर्जनात्मकता के विकास के अवसर देने के साथ अपनी मातृभूमि की जड़ों से भी जोड़े रखा। विदेशों में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं के उद्भव और विकास में एक वर्ग भी है, यह वर्ग उन देशों का है जो उस देश के मूल

प्रस्तावना :

एशिया के देशों में हिन्दी पत्रकारिता

भारत एशिया का प्रमुख देश है। इसके पड़ोसी अन्य देशों में पाकिस्तान, बंगलादेश, नेपाल, बर्मा, श्रीलंका, जापान और चीन प्रमुख देश हैं। यह सर्वविदित है कि अंग्रेजों ने भारत को दो टुकड़ों में बांट दिया और 14 अगस्त 1947 को पाकिस्तान का निर्माण हुआ। पाकिस्तान के निर्माण से पहलै लाहौर हिन्दी साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता केन्द्र था। 'प्रेमचन्द की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ' पुस्तक का प्रकाशन सन् 1934 में चन्द्रगुप्त विद्यालंकार ने लाहौर से किया था। 17 दिसम्बर 1971 को बंगलादेश का निर्माण हुआ और ढाका हिन्दी पत्रकारिता का केंद्र बना। यहाँ से धर्मनीति तत्व (1880), विद्याधर्म दीपिका (1888), द्विज (1889), नागरी हितैषी (1905), तत्वदर्शन (1911), मेल–मिलाप (1939) तथा बिहार बंधु (1871) के प्रकाशन के प्रमाण मिलते है। 'मौजी' तथा 'साहित्य' त्रैमासिक पत्रिकाएं भी उल्लेखनीय हैं।

नेपाल में स्थिति एकदम अनुकूल रही है। नेपाल में हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ मोतीराम ने किया। वे पत्रकार एवं साहित्यकार दोनों थे। नेपाल नरेश ने भी हिंदी पत्रिकाओं को आर्थिक सहयोग देकर उन्हें विकसित होने का अवसर प्रदान किया। इन पत्रिकाओं में 'रिमझिम' (1916) उल्लेखनीय है। नेपाल के दैनिक पत्रों में 'समाज' और 'गोरखा पत्र', पाक्षिक पत्रों में 'प्रतिध्वनि' और 'कंचनजंघा', मासिक पत्रिकाओं में 'बालक', 'महिला बोल्छिन', 'पंचायत', 'मजदूर', 'रूपरेखा', 'विद्वान', द्वैमासिक में 'कल्पना' और 'रत्नश्री' तथा त्रैमासिक पत्रिकाओं में 'मानु' एवं 'नेपाली' उल्लेखनीय हैं। इनके अतिरिक्त 'जनचेतना', 'हिमालय', 'हिमोक्त संस्कृत', 'सही रास्ता', 'नव नेपाल', 'निजामत', 'सेवा पत्रिका', 'शिक्षा', 'हुलाक', 'नेपाल' आदि पत्र–पत्रिकाओं का भी उल्लेख मिलता है। त्रिभुवन विश्वविद्यालय के हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. कृष्णचन्द्र मिश्र ने 'साहित्य लोक', त्रैमासिक पत्रिका निकाली थी और अब उनके देहांत के बाद कृष्णचन्द्र मिश्र साहित्य अकादमी 'हिमालिनी', त्रैमासिक पत्रिका निकाल रही है। इस पत्रिका से अब एक नई पीढ़ी सामने आई है।

बर्मा में कई शताब्दी से भारतीय जाते रहे हैं। इन भारतीयों ने अपने प्रयास से हिन्दी भाषा, साहित्य एवं पत्रकारिता से अपने समाज को जोड़ा और बर्मी भाषा के प्रभुत्व के बावजूद उसे जीवित रखा। लाठिया ने 'बर्मा समाचार' के प्रकाशन से हिन्दी पत्रकारिता की नींव रखी। इसके बाद 'प्राची कलश' मासिक पत्र निकला तथा सन् 1934 में हिन्दी दैनिक 'प्राची प्रकाश' रंगून से निकला। इसके संपादक अनंतराम मिश्र एवं श्यामाचरण मिश्र थे। इसके कुछ समय बाद 'प्रवासी' साप्ताहिक पत्र तथा 'नवजीवन' दैनिक पत्र का प्रकाशन शुरू किया गया, परन्तु आर्थिक कठिनाई के कारण दोनों ही बंद हो गए। सन् 1953 में 'ब्रह्म भूमि' मासिक पत्र आरम्भ हुआ। सन् 1970 में 'आर्य युवक जागृति' मासिक पत्रिका भी निकाली पर कुछ समय बाद बंद हो गई। श्री लंका में सुग्राहिनी (1881) मासिक पत्रिका के निकलने का प्रमाण मिलता है, जिसकी संपादिका श्रीमती हेमंत कुमारी थी।

जापान, चीन और तिब्बत में भी हिन्दी पत्रकारिता का अस्तित्व है। जापान में सन् 1964 में अंक मासिक पत्रिका प्रकाशित हुई और इसके इक्कीस अंक छप चुके हैं। 'ज्वालामुखी' त्रैमासिक पत्रिका टोकियो में सन् 1980 में निकली, लेकिन इसके दो ही अंक निकल सके। इसके संपादक योशिअकि सुजुकी थे। इस पत्रिका के लेखक प्रायः जापानी हैं। जहाँ तक चीन का संबंध है, वहाँ की सरकार 'चीन सचित्र' निकालती है, जो मासिक रूप से प्रकाशित होता है। इसके अभी तक लगभग पांच सौ अंक

निकल चुके हैं। लेकिन अब उसका प्रकाशन बंद है। तिब्बत की स्वतंत्रता को लेकर सन् 1988 में धर्मशाला से 'तिब्बत बुलेटिन' का प्रकाशन हो रहा है। यद्यपि इसका प्रकाशन भारत से हो रहा है, परंतु यह तिब्बत की स्वतंत्रता और अस्मिता के प्रश्नों को उठाने के कारण हिंदी पाठकों के लिए महत्त्वपूर्ण हो गई है। इस पत्रिका के संपादक अर्नेस्ट एल्बर्ट तथा प्रकाशन सोनम तोदग्याल करते हैं।

यूरोप के देशों में हिन्दी पत्रकारिता

यूरोप के देशों में रूस, ब्रिटेन, नॉर्वे, जर्मन, फ्रांस, हॉलैंड आदि महत्त्वपूर्ण देश हैं। रूस का भारत के प्रति मैत्री भाव सदैव ही रहा है। वहाँ की सरकार 'सोवियत संघ' तथा 'सोवियत नारी' मासिक हिंदी पत्रिकाएं भी प्रकाशित कर रही हैं। ये पत्रिकाएं काफी लोकप्रिय रही हैं इनके अतिरिक्त 'सोवियत दर्पण', यूनोस्त हिंदी', 'युवक दर्पण' आदि हिंदी पत्रिकाएं भी प्रकाशित होती रही हैं। इन हिंदी पत्रिकाओं ने भारत और रूस के नागरिकों को निकट ही नहीं लाया, बल्कि साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक संबंधों को भी स्थायी बनाया।

यूरोप के देशों में इंग्लैण्ड (ब्रिटेन) का भारत के संदर्भ में विशेष महत्त्व है। भारत लगभग दो सौ वर्षों तक इंग्लैण्ड का गुलाम रहा और भारत पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा। भारत से अनेक युवक ऊंची शिक्षा के लिए इंग्लैंड गए और उनमें से काला कांकर नरेश ने 'हिंदोस्थान' नामक पत्र का प्रकाशन सन् 1883 में आरंभ किया। इसके बाद आर्य समाज ने ''वैदिक पब्लिकेशंस' का प्रकाशन किया और फिर जे.एस.कौशल के संपादकत्व में 'अमरदीप' साप्ताहिक का प्रकाशन शुरू हुआ। सन् 1964 में 'हिंदी प्रचार परिषद' ने 'प्रवासिनी' त्रैमासिक निकाला, जिसके संपादक धर्मेंद्र गौतम थे इसके उपरांत डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी इंग्लैंड में भारतीय उच्चायुक्त बने तो उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य के प्रति समर्पित भारतीयों को संगठित किया और 'हिंदी समिति यू.के.' की स्थापना कराई। पद्मेश गुप्त ने इस समिति का कार्यभार ग्रहण किया और 'पुरवाई' (1997) त्रैमासिक हिंदी पत्रिका का आरंभ किया। यह अभी तक प्रकाशित हो रही है। तथा प्रायः इंग्लैड के हिंदी लेखकों की कविताएं, कहानियां, संस्मरण, लेख आदि इसमें दिए जाते हैं। इंग्लैण्ड के हिंदी लेखकों में दिव्या माथुर, गौतम सचदेवा, उषा राजे सक्सेना, मोहन राणा, सत्येंद्र श्रीवास्तव, कृष्णा अनुराध, तेजेंद्र शर्मा, उषा वर्मा, सोहन राही, राकेश माथुर, के.जी. खंडेलवाल आदि प्रमुख हैं। भारत के कुछ हिंदी साहित्यकारों की रचनाएँ भी 'पुरवाई' में छपती रही हैं, जिनमें डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी, लल्लनप्रसाद व्यास, कमल किशोर गोयनक, शिवमंगल सिंह 'सुमन', श्यामसिंह 'शशि', रामदरश मिश्र, जगदीश चतुर्वेदी, दाऊजी गुप्त, विश्वनाथ प्रताप सिंह आदि उल्लेखनीय हैं। 'पुरवाई' के प्रकाशन में इंग्लैण्ड की 'गीताजंलि समुदाय' तथा 'भारतीय भाषा संगम' संस्थाएं भी अपना सहयोग दे रही हैं। 'पुरवाई' पत्रिका के संपादक पद्मेश गुप्त तथा उनके साथियों ने 14–18 सितंबर 1999 को लंदन में 'छठा विश्व हिंदी सम्मेलन' भी आयोजित किया और 20 देशों के लगभग 350 प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया।

भारत के लगभग सभी पत्र–पत्रिकाओं जैसे कि टाइम्स ऑफ इंडिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, द टेलिग्राफ, द हिंदु के पूर्णकालिक संवाददाताओं के अलावा पी.टी.आई., आई.ए.एन.एस. जैसी संवाद समितियां भी ब्रिटेन में कार्यरत हैं। इसके अलावा आनंद बाजार पत्रिका, इंडियन एक्सप्रैस, एशियन एज, द ट्रिब्यून, डेकन हेराल्ड, पाइनियर और इंडिया टूडे जैसे पत्र–पत्रिकाओं के अंशकालिक संवाददाता यहाँ नियुक्त है एशियन एज का तो लंदन का संस्करण ही अलग से निकलता है। स्थानीय मीडिया ने ब्रिटेन में भारतीय भाषाओं एवं संस्कृति के प्रचार–प्रसार में बखूबी योगदान दिया है। गुजराती में गुजरात समाचार, गरवी गुजरात और गुजरात संदेश, पंजाबी में देश–परदेश, पंजाबी मेल, पंजाब टाइम्स तथा अंग्रेजी में ईस्टर्न आई और एशियन वॉयस प्रमुख हैं। इनमें से क्रमशः गुजरात समाचार देश–परदेश और एशियन वॉयस की पकड़ अपने–अपने समुदाय में सर्वाधिक है। नई पीढ़ी के लिए स्नूप देशी एशियन एक्सप्रेस तथा प्रवासी टुडे भी पसंद किए जा रहे हैं।

लगभग तीस वर्ष प्रकाशित होने वाला एकमात्र प्रमुख साप्ताहिक हिन्दी समाचार पत्र 'अमरदीप'। अब केवल हिन्दी और उर्दू में प्रकाशित होने वाला केवल नवीनी साप्ताहिक ही है। हिन्दी की एकमात्र साहित्यिक पत्रिका पुरवाई है जो यू.के. हिन्दी समिति द्वारा प्रकाशित की जाती है। बी.बी.सी. की नेट पत्रिका बी.बी.सी. हिंदी डॉट कॉम भी अपनी तरह की एकमात्र स्थानीय समाचार पत्रिका है। एक त्रिभाषी समाचार पत्र 'परदेश वीकली' भी हिंदी, अंग्रेजी और पंजाबी में सन् 2006 से प्रकाशित किया जाने लगा है। भारतीय उच्चायोग, लंदन से उसकी गृह पत्रिका 'भारत भवन' हिन्दी में प्रकाशित की जाती है। इस प्रकार डॉ. लक्ष्मीमल्ल सिंघवी ने इंग्लैंड में हिन्दी की जो पौध लगाई थी, वह अनेक रूपों में फल–फूल रही है। इधर कुछ वर्षों से 'प्रवासी टुडे' भी प्रकाशित हो रही है। इसके संपादक भी पद्मेश गुप्त हैं।

नॉर्वे से सुरेशचंद्र शुक्ल तथा हिमांशु जोशी के पुत्र अमित जोशी ने हिंदी पत्रिकाओं का आरंभ करके नॉर्वे को भी विश्व हिंदी पत्रिका से जोड़ दिया। सुरेशचंद्र शुक्ल ने सन् 1979 में 'परिचय' निकाला और सन् 1988 में 'स्पाइल' (दर्पण) द्वैमासिक पत्रिका निकाली, जो अब तक निकल रही है। 'स्पाइल' पत्रिका हिंदी, नॉर्वेजियन तथा अंग्रेजी भाषा में निकलती है, परंतु आधे से अधिक सामग्री हिंदी में होती है। सुरेशचंद्र शुक्ल ने इस पत्रिका में भारत के लेखकों तथा नॉर्वे के लेखकों दोनों की रचनाएँ प्रकाशित करके दोनों देशों को एक स्थान पर लाने का प्रयास किया। 'शांति दूत' (1990) भारतीय संस्कृति की संवाहक त्रैमासिक पत्रिका है, जो हिंदी, अंग्रेजी एवं नॉर्वेजियन भाषा में छपती है।

अफ्रीका के देशों में हिंदी पत्रकारिता

अफ्रीका के मॉरीशस, सूरीनाम, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में हिंदी पत्रकारिता ने महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। मॉरीशस के विद्वानों का मत है कि मॉरीशस में हिंदुत्व की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना से हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास हुआ। मणिलाल डॉक्टर गांधी जी की प्रेरणा से 13 अक्तूबर 1907 को मॉरीशस पहुँचे थे और उन्होंनें 15 मार्च 1909 को 'हिंदुस्तानी' पत्रिका का प्रकाशन आंरभ किया। आंरभ में इसे अंग्रेजी और गुजराती भाषा में प्रकाशित किया गया, किन्तु बाद में इसे अंग्रेजी के साथ–साथ हिंदी, में छापा जाने लगा। इसके 2 मार्च, 1913 के उपलब्ध अंक में 'गणेशी' नाम के किसी कवि की कविता 'होली' तथा किसी अज्ञात लेखक का लेख 'सत्य होली' प्रकाशित हुआ है। इन्हीं रचनाओं में मॉरीशस में हिंदी लेखन का श्रीगणेश हुआ है। मॉरीशस के इतिहासकारों के अनुसार– 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' (1911) तथा 'ओरिएंटल गजट' (1912) भी अंग्रेजी–हिंदी की पत्रिकाएँ थीं, परंतु अब उनके कोई अंक उपलब्ध नहीं है। इसके उपरांत 'मॉरीशस इंडियन टाइम्स' (1920–24), 'मॉरीशस मित्र' (1924–32), 'मॉरीशस आर्य पत्रिका' (1920–40), 'आर्यवीर (1929–45), 'सनातन धर्मांक (15 दिसंबर 1933–42), 'बसंत (1935, केवल एक अंक प्रकाशित हुआ), 'दुर्गा', हस्तलिखित पत्रिका (1935–38), 'जागृति' (1939–50), 'मासिक चिट्ठी' (1942–50) 'आर्यवीर जागृति' (1945–50), 'सैनिक (1946–47), 'जनता' (4 मई 1948–82), 'जमाना' (18जून, 1948 से आंरभ), 'आर्योदय' (1950 से आरंभ), 'वर्तमान' (1953–54), 'मजदूर' (1956–59), 'अनुराग' (जुलाई 1961–61), 'नवजीवन' (1960–64),

'समाजवाद' (1960–61), 'कांग्रेस (1964), 'बालसखा' (अगस्त 1965 से अक्तूबर 65), 'अनुराग' (अक्तूबर, 1969 – जुलाई 77), 'दर्पण' (1971–79), 'आभा' (1976–76), 'हमारा देश' (1971–74), 'निर्माण' (1975, केवल एक अंक प्रकाशित) 'विश्व–दर्पण', बसंत' (1978 से निरंतर प्रकाशित), 'भारतीय समाचार (1972 से भारतीय दूतावास द्वारा प्रकाशित), 'प्रभात' (1976–79), 'प्रकाश' (1974 से अनियमित रूप से प्रकाशित), 'परिवर्तन' (सूचना मंत्रालय द्वारा 1978–79 तक प्रकाशित), 'त्रिवेणी' (1974 से पर अब बंद हो चुकी है), 'स्वेदश' (1987–91), 'इंद्रधनुष' (अक्तूबर 1988 से निरंतर प्रकाशित), 'आक्रोश' (1990 से निरंतर प्रकाशित), 'मुक्ता' (1990–92), 'भारत दर्शन' (1989–91), 'पंकज' (दिसंबर 1993 से निरंतर प्रकाशित) एवं 'रिमझिम' (जून–जुलाई, 1994 से निरंतर प्रकाशित) आदि। हिंदी पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ है। मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना के बाद डॉ. विनोद बाला अरूण के प्रधान संपादकत्व में 'विश्व हिंदी समाचार' का प्रकाशन हो रहा है। इसका पहला अंक मार्च 2008 में निकला और अब इसका आठवां अंक प्रकाशित होने वाला है। यह पत्रिका विश्व में हिंदी के कार्यों, प्रकाशनों तथा गतिविधियों को एक स्थान पर देने का महत्वपूर्ण कार्य कर रही है। सरिता बुद्धू ने अनेक वर्षों तक हिंदी साप्ताहिक पत्र निकालकर अद्‌भुत साहस एवं हिंदी प्रेम का परिचय दिया। इस प्रकार मॉरीशस की हिंदी पत्रकारिता का इतिहास लगभग 90 वर्ष का है और इस कालखंड में लगभग 42 पत्र–पत्रिकाओं ने जन्म लिया। इनमें से अधिकांश पत्रिकाएँ काल–कवलित हो गई और अब 'बसंत', 'रिमझिम', 'आक्रोश', 'इंद्रधनुष', 'पंकज', 'आर्यावर्त्त', और 'विश्व हिंदी समाचार प्रकाशित हो रही हैं। इन हिंदी पत्र–पत्रिकाओं में दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्वैमासिक एवं त्रैमासिक सभी प्रकार की पत्रिकाएँ हैं तथा साहित्यिक पत्रिकाओं का भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

सूरीनाम में भी भारतीयों के जाने और बसने से वहाँ हिंदी पत्रकारिता का आरंभ हुआ। मॉरीशस की तुलना में यद्यपि हिंदी पत्रकारिता विलम्ब से शुरू हुई, परंतु कुछ हिंदी प्रेमियों तथा आर्य समाज, सनातन धर्म महासभा, सरस्वती प्रेस आदि संस्थाओं ने उसी कर्मठता और लगन से हिंदी पत्र–पत्रिकाओं को शुरू किया। सूरीनाम में आर्य समाज को इसका श्रेय है कि उसने सन् 1964 में 'आर्य दिवाकर' नाम से एक पत्रिका निकाली। इसका प्रकाशन अभी तक हो रहा है। इसी वर्ष पं. शिवरत्न के संपादकत्व में 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आंरभ हुआ। यह लघु आकार में साहित्यिक पत्रिका थी। इसके बाद 'भारतोदय', डॉ. ज्ञान हंस 'अधीन' के संपादकत्व में 'धर्मप्रकाश', पं. शिवरत्न के संपादकत्व में ''वैदिक संदेश' प्रेमचंद के संपादकत्व में 'प्रेम संदेश' महातम सिंह के संपादकत्व में शांति–दूत आदि का प्रकाशन हुआ, किंतु ये सभी बंद हो गए। इसके साथ 'प्रकाश' और 'विकास' साप्ताहिक पत्र भी निकले, किंतु चल नहीं पाए। सूरीनाम हिंदी परिषद् ने सन् 1984 में 'सूरीनाम दर्पण' का प्रकाशन आरंभ किया, जिसका मुख्य उद्‌देश्य 'हिंदी पढ़ो ही नहीं, वरन् लिखो भी' था, जिसके मूल में अपनी अस्मिता, स्वाभिमान एवं गौस्वामी प्रतिष्ठा की रक्षा और उनके विकास का भाव था। सूरीनाम में हिंदी पत्रकारिता के विकास में पं. शिवरत्न शास्त्री, महातम सिंह आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा है तथा वहाँ पर हुए 'विश्व हिंदी सम्मेलन' ने हिंदी के विकास में ऐतिहासिक कार्य किया है।

अमेरिका में भारतीयों ने हिंदी पत्रकारिता का आंरभ किया। अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों, मंदिरों तथा अन्य भारतीय संस्थाओं में हिंदी का शिक्षण हो रहा है। डॉ. कुंवर चंद्रप्रकाश सिंह ने 18 अक्तूबर, 1980 को अमेरिका में 'अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति' की स्थापना की और इसी वर्ष से 'विश्वा' त्रैमासिक हिंदी पत्रिका का प्रकाशन आरम्भ किया। यह एक साहित्यिक पत्रिका है और अपने स्तर को बनाए हुए है। ''विश्वा'' के अप्रैल 1998 के अंक में गुलाब खंडेलवाल ने अपने संपादकीय में लिखा है कि 'अंतराष्ट्रीय हिंदी समिति' भारतीय संस्कृति की ज्योति को प्रज्ज्वलित करने के लिए सचेष्ट हैं जिस प्रकार हिमालय से निकलने वाली गंगा स्थान–स्थान पर विविध नदियों का प्रवाह ग्रहण करती हुई भी अंत तक गंगा ही रहती है, उसी प्रकार हमारी संस्कृति भी आधुनिक युग के अच्छे–अच्छे विचारों को ग्रहण करती, देश–विदेश के तटों की सोधी सुवास को समेटती, उनका परिष्कार करती हुई आगे बढ़ती जाएगी, इसका हमें विश्वास है। 'विश्वा' का प्रकाशन अब भी अमेरिका से होता है और इसकी संपादक श्रीमती रेणु गुप्ता 'राजवंशी' हैं। रेणु जी वहाँ की एक प्रसिद्ध लेखिका हैं और 'जागरण' में भी उनके लेख छपते रहे हैं।

अमेरिका में रामेश्वर अशांत ने 'विश्व हिंदी समिति' की स्थापना की और 'सौरभ' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। अमेरिका में गणित के भारतीय प्रोफेसर डॉ. भूदेव शर्मा ने भी 'विश्व–विवेक' त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन किया। विवेक उनका पुत्र था और उसकी अकाल मृत्यु पर उन्होंने 'विश्व–विवेक' त्रैमासिक पत्रिका का आरम्भ किया। विश्व–विवेक के प्रवेशांक में उन्होंने भी अपने संपादकीय में पश्चिमी देशों की विकराल दानवी संस्कृति की चर्चा की और कहा कि भारतीयता अर्थात् भारतीय भाषा, भजन, भोजन तथा भेष आदि सांस्कृतिक तत्वों की रक्षा करके ही यहाँ भारतीय संस्कृति की रक्षा की जा सकती है। डॉ. भूदेव शर्मा ने भाषा की भूमिका को रेखांकित किया और इसीलिए हिंदी में पत्रिका निकालने का निर्णय किया। डॉ. दशरथ ओझा का पत्र इसके अंक–3 में छपा है, जिसमें उन्होंने इस पत्रिका को 'अभूतपूर्व' कहकर प्रशंसा की है। इसी अंक प्रचार में गुलाब खंडेलवाल ने लिखा है– ''यह निर्विवाद है कि हिंदी के प्रचार द्वारा ही इस देश (अमेरिका) में हम भारतीय संस्कृति और धर्म की रक्षा कर सकते हैं और अपनी पहचान बनाए रख सके।'' इस पत्रिका के अंकों में कविता, कहानी, संस्मरण, यात्रा–वृतांत, व्यंग्य, लेख, ह्यस–परिह्यस, समाचार, संपादकीय, पत्रांश आदि अनेक विधाओं की रचनाएं प्रकाशित हुई हैं। इस प्रकार 'विश्व विवेक' एक संपूर्ण त्रैमासिक पत्रिका है। विषय की दृष्टि से पश्चिमी और भारतीय जीवन के विविध पक्षों पर पत्रिका में सामग्री उपलब्ध होती है और बार–बार भारतीय धर्म, संस्कृति, कला, साहित्य, भाषा, जीवन शैली की रक्षा का स्वर उभरकर सामने आता है। यह कहना सर्वथा उचित होगा कि अमेरिका में प्रकाशित 'सौरभ', 'विश्वा' तथा 'विश्व विवेक' हिंदी पत्रिकाओं ने जो हिंदी पत्रकारिता में कीर्तिमान बनाया है, वह अभूतपूर्व है।

कनाडा में 'हिंदी चेतना' त्रैमासिक निकलती है। इसके संपादक प्रो. श्याम त्रिपाठी तथा डॉ. सुधा ओम ढींगरा हैं। इसके प्रेमचंद, नरेश कोहली, कामिल बुल्के विशेषांक बहुत ही पसंद किए गए। 'हिंदी चेतना' तथा उसकी टीम इस क्षेत्र में हिंदी भाषा और साहित्य के विकास के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है। इस संबंध में प्रो. श्याम त्रिपाठी, सुधा ओम ढींगरा का योगदान उल्लेखनीय है। सुधा जी की तो कई हिंदी पुस्तकें छप चुकी हैं। कनाडा से ही श्रीमती स्नेह ठाकुर 'वसुधा' नामक पत्रिका निकालती है और अनेक वर्षों से हिंदी साहित्य की सेवा कर रही हैं।

भारतीय विद्या संस्थान की स्थापना प्रोफेसर हरिशंकर आदेश द्वारा की गई। सन् 1981 में त्रिनिडाड से टोरंटो आए थे। सन् 1984 में उन्होंने 'विद्या मंदिर' नामक संस्थान की स्थापना की और हिन्दी, संस्कृत व भारतीय संस्कृति का अध्यापन व प्रोत्साहन कर रहे हैं। उन्होंने 'ज्योति' नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन भी आरंभ किया था। 'हिन्दी साहित्य सभा' की सन् 1997 में स्थापना की गई। डॉ. भारतेन्दु श्रीवास्तव इसके संस्थापक अध्यक्ष थे। आज यह संस्था हिन्दी को बढ़ावा देने में अत्यन्त सक्रिय है। हिंदी प्रचारिणी सभा का सन् 1998 में गठन किया गया। श्री श्याम त्रिपाठी इसके अध्यक्ष है। वह पत्रिका 'हिन्दी चेतना' का प्रकाशन करते हैं, जो एक साहित्यिक पत्रिका है। वहीं ग्रेटर पैकूवर में सन् 1998 में 'हिन्दी लिटरेरी सोसायटी ऑफ कनाडा' बी. सी. का गठन किया गया। इसके संस्थापक अध्यक्ष श्रीनाथ पी. द्विवेदी हैं। वह कुशलतापूर्वक इस संस्था का नेतृत्व कर रहे हैं। यह संस्था कविता–पाठ सत्रों, सेमिनारों, पुस्तक विमोचन और कवि गोष्ठियों का आयोजन भी करती है। कनाडा में हिन्दी भाषा की

अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं। श्री राकेश तिवारी की पत्रिका 'हिंदी टाइम्स' और श्री रवि पांडे की 'हिंदी अब्रॉड' उल्लेखनीय है। संभवतः 'नवभारत' कनाडा का प्रथम हिंदी समाचार–पत्र था, जिसका सन् 1977 में टोरंटो से प्रकाशन किया गया था। किन्तु कुछ अंक निकालने के बाद उसका प्रकाशन बन्द कर दिया गया। 70 के दशक के उत्तरार्द्ध में टोरंटो मॉन्ट्रीयल व विनिपेग में कुछ संगठनों द्वारा कुछ हस्तलिखित समाचार पत्रों का प्रसार किया जाता था। होली व दीवाली पर इन समाचार पत्रों के विशेषांक भी निकाले जाते थे।

टोरंटो शहर के रघुबीर सिंह ने अगस्त 1981 में साप्ताहिक समाचार पत्र 'विश्व भारती' निकाला था। यह समाचार–पत्र कुछ साल तक चला। सन् 1982 में प्रोफेसर जगमोहन ने ओटावा से द्विभाषी पाक्षिक पत्रिका 'अंकुर' निकाली। हिंदी–अंग्रेजी में निकलने वाली यह पत्रिका कुछ साल तक चलती रही। इसने पाठकों की रूचि को जागृत तो किया, पर अधिक समय तक नहीं चल सकी। इसी तरह त्रिलोचन सिंह गिल की मासिक पत्रिका 'भारती' भी अल्पकालिक साबित हुई। क्यूबेक हिंदी संघ की पत्रिका 'प्रगति' ने हिन्दी लेखकों को एक मंच प्रदान किया। मॉन्ट्रीयल के प्रोफेसर राजेन्द्र सिंह और प्रोफेसर टी.डी. द्विवेदी ने सन् 1985 में 'प्रवासी' पत्रिका निकाली परन्तु यह सन् 1988 में बन्द हो गई। टोरंटो के उमेश विजय ने सन् 1985 में 'संगम' नामक समाचार पत्र निकाला था, जिसने पाठकों की रूचि को जागृत किया। ब्रिटिश कोलंबिया में डॉ. नीलम वर्मा ने नवंबर 2005 से अंग्रेजी/हिन्दी के 'एशियन आउटलुक' नामक द्विभाषी मासिक पत्रिका निकाली। पोर्ट मुडी के निवासी श्री जाहिद लर्डक 'शाहपट' पत्रिका के मुख्य संपादक हैं। द्विमासिक बहुभाषी यह पत्रिका सन् 2001 से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका का एक खंड हिंदी आलेखों के लिए समर्पित है। हिंदी की पहली पुस्तिका 'हिंदी संवाद' प्रोफेसर ओ.पी.द्विवेदी व डॉ. बी.एन.द्विवेदी के सक्रिय सहयोग से एल.एल.एस.सी. द्वारा सन् 1984 में शुरू की गई थीं एस.पी. द्विवेदी पुस्तिका की शुरूआत से ही इससे जुड़े हैं। वह इसके मुख्य संपादक हैं और इसके विशेषांक, बाजार में आते ही हाथों हाथ बिक जाते हैं। अगस्त 2007 में पश्चिमी कनाडा के बाजारों में एक नई पत्रिका 'हम वतन टाइम्स' का आवरण हुआ। सप्ताह में दो बार प्रकाशित इस पत्रिका में अधिकांश आलेख हिंदी में होते हैं। श्री जमशेर, करनाल इसके मुख्य संपादक हैं।

विश्व के कुछ अन्य देशों में भी, जहाँ भारतीय मजदूर बनकर गए, हिंदी पत्रकारिता के प्रमाण मिलते हैं। इनमें गयाना, ट्रिनीडाड एवं टोबैगा तथा फिजी को सम्मिलित किया जाता है। गयाना में हिंदी पत्रकारिता का आरम्भ 'आर्गोसी' अंग्रेजी दैनिक पत्र में रविवार को एक पृष्ठ हिंदी को देने से आरम्भ हुआ। यहाँ भी आर्य समाज ने 'आर्य–ज्योति' तथा सनातन धर्म सभा ने 'अमर ज्योति' पत्र प्रकाशित किए एवं योगीराज शर्मा ने 'ज्ञानदा' मासिक पत्र निकाला। ट्रिनीडाड एवं टौबैगो में सबसे पहले 'कोहेनूर अखबार' (दैनिक) निकला, जो अब बंद हो गया है। इस देश में 'हिंदु' और 'आर्य संदेश' पत्रों के निकलने के भी प्रमाण मिलते हैं। फिजी में स्थिति इन देशों से भिन्न है। सन् 1913 में पं. शिवदत्त शर्मा की देख–रेख तथा डॉ. मणिलाल के संपादकत्व में 'सेटलर' का हिंदी अनुवाद साइक्लोस्टाइल रूप में प्रकाशित हुआ। फिजी में इससे हिंदी पत्रकारिता का आरम्भ हुआ। इसके बाद 'फिजी समाचार' (1923–37) साप्ताहिक निकला, जो काफी लोकप्रिय हुआ। लगभग इसी समय 'भारत पुत्र', 'बुद्धि एवं बुद्धिवाणी' आदि पत्र निकले जो शीघ्र ही बंद हो गए। सन् 1930–40 के बीच ''वैदिक संदेश'' तथा 'सनातन धर्म' दो मासिक पत्र निकले, परन्तु इन्होंने भी लघु जीवन पाया। सन् 1935 में 'शान्तिदूत' साप्ताहिक शुरू हुआ। इसके संस्थापक–संपादक पं. गुरूदयाल शर्मा हैं। सन् 1940 के आसपास 'किसान' (संपादक : पं. वी.डी.लक्ष्मण), 'दीनबंधु' (फिजी कृषक महासंघ का पत्र), 'ज्ञान' और 'तारा' (संपादक : ज्ञानीदास) 'पुस्तकालय' (आर्य पुस्तकालय का पत्र), 'प्रवासिनी (सम्पादक : काशीराम कुमुद), 'प्रकाश' (सम्पादक : राम खेलावन) आदि पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ, परन्तु ये सभी शीघ्र ही बन्द हो गई। इसी प्रकार 'जंजाल' 'सनातन प्रकाश', 'मजदूर' आदि पत्र भी निकले, लेकिन कुछ अंकों के बाद ही अदृश्य हो गए। इसी समय 'जागृति' भी निकला जो बाद में साप्ताहिक हो गया लेकिन चल नहीं सका। 'आवाज' (1953) और 'झंकार' साप्ताहिक रूप में निकले। इसका जीवन भी कुछ वर्षों का ही रहा। पं. कमलाप्रसाद मिश्र ने सन् 1960 में 'जय फिजी' पत्र का प्रकाशन शुरू किया। यह अत्यन्त लोकप्रिय पत्र है और पिछले दिनों तक निकलता रहा है। पं. विवेकानन्द शर्मा के संपादकत्व में सन् 1974 में 'सनातन संदेश' मासिक पत्र निकला। फिजी सरकार ने भी 'राजदूत' (1918–26), 'फिजी वृतांत, 'शंख' आदि पत्र निकाले, परन्तु ये भी बंद हो गए। इसके विपरीत 'दि इंडियन टाइम्स' (संपादक : रामसिंह) काफी लोकप्रिय हुआ। इसका प्रकाशन सन् 1945 में आरंभ हुआ। इसी प्रकार 'शांतिदूत' साप्ताहिक (संपादक : एस.एस.दास) भी लोकप्रिय रहे। डॉ. विवेकानंद शर्मा के संपादकत्व में सन् 1999 में 'फिजी संस्कृति मासिक पत्र भी आरंभ हुआ। यह हिंदी महापरिषद की मासिक पत्रिका है, जिसके विवेकानन्द शर्मा ही संस्थापक थे। इसके साथ ही 'हिंदी लेखक संघ' का 'मासिक समाचार बुलेटिन' के रूप में लहर का प्रकाशन सन् 1999 से आरंभ हुआ। इसके अध्यक्ष–संपादक हरिनदंन सिंह हैं। इसके जनवरी 2000 (अंक 6) में संपादक ने लिखा है– ''राष्ट्र में हिंदी का गौरव बढ़े, हिंदी का प्रचार–प्रसार हो तथा हमारी सभ्यता, संस्कृति और साहित्य की रक्षा में पूर्ण सफल हों, यही हमारी मंगल कामना है। हिंदी की लहर ऐसी चले कि सारा देश हिंदी वातावरण की अनुभूति कर सके।''

निष्कर्ष

इस प्रकार इन विदेशी पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से हिन्दी भाषा का विकास हो रहा है। निश्चित ही भविष्य में विश्व–स्तर पर हिन्दी एक अन्तर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में ख्याति प्राप्त कर सकेगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

ओमप्रकाश केजरीवाल, 'विदेश में हिंदी' स्थिति और संभावनाएं, प्रकाशक : नेहरू स्मारक संग्रहालय एवं पुस्तकालय, तीन मूर्ति भवन, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. 338
आ.श्रीनाथ प्रसाद द्विवेदी, कनाडा में हिंदी का फलक, विश्व हिंदी पत्रिका, 2009, पृ. 46–50
कृष्ण कुमार, ''वैश्विकरण के दौर से भारतीय भाषायी समन्यवय की प्रासंगिकता : गुजरात विद्यापीठ के परिप्रेक्ष्य में, गगनाचंल, अप्रैल–जून 2008, पृ. 46–48
कैलाशचंद्र भाटिया तथा श्री मोतीलाल चतुर्वेदी की पुस्तक 'हिंदी भाषा : विकास और स्वरूप
कमल किशोर गोयनका, भारतेतर देशों में हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं का इतिहास और स्वरूप, विश्व हिन्दी पत्रिका, 2001, पृ. 115–122
राकेश बी.दुबे, ''ब्रिटेन में हिन्दी की स्थिति : एक सर्वेक्षण'', हिन्दी पत्रिका, 2009, पृ. 51–55
परमानंद पांचाल, एशियाई देशों में हिंदी की स्थिति, विश्व हिंदी पत्रिका, 2009, पृ. 91–94

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished research paper.Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review of publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- EBSCO
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Golden Research Thoughts
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.isrj.net